पर्यावरण का संतुलन बनाए रखना जरूरी है

अदीती कुमार
सैक्टर 34, नोएडा

5 जून को पूरे विश्व में **"विश्व पर्यावरण दिवस"** मनाया जाता है। इस दिवस को मनाने की शुरूआत सन् 1973 में अमेरिका द्वारा की गई थी। वास्तव में सृष्टि के निर्माण में प्रकृति की अहम भूमिका है और इतिहास गवाह है कि जिस किसी देश, व्यक्ति या जीव ने प्रकृति के खिलाफ जाने की कोशिश की, उसी ने अपना अस्तित्व खो दिया। पूर्वजों की मानें तो सृष्टि का निर्माण प्रकृति के साथ ही हुआ है। सबसे पहले वनस्पतियाँ आई जिनसे जीवन का प्राथमिक भोजन बना और उसके बाद ही अन्य जीवों की जीवन प्रक्रिया शुरू हुई। इतिहास के अनुसार मनुष्य की उत्पत्ति जानवरों की उत्पत्ति के काफी समय बाद हुई है और अगर गौर किया जाये तो वास्तव में मनुष्य की उत्पत्ति के बाद से ही सृष्टि में और यहाँ तक कि प्रकृति में बदलाव आने शुरू हुए। मनुष्य एक विवेकशील प्राणी होने के कारण रोज नये-नये प्रयोगों में लगा रहा और अपनी जरूरतों के अनुसार उसने नित नये-नये उपकरणों को खोजना शुरू कर दिया और फिर उन्हें प्राप्त करने में अगर उसे प्रकृति की अनमोल धरोहर को भी भेंट चढ़ाना पड़ा तो वह नहीं चूका और प्रकृति को रौंदता हुआ आगे बढ़ता गया।

प्रकृति का वह आवरण जिसने हमें चारों ओर से घेर रखा है, पर्यावरण कहलाता है। आज वही पर्यावरण प्रदूषण की चरम सीमा तक पहुँच चुका है। सदियों से नई-नई खोजों में लगा मनुष्य आज इतना विकसित हो चुका है कि आज अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए उसने इतने अधिक कल-कारखानें लगा दिये हैं जो लोगों को तो रोजगार दे रहे हैं परन्तु साथ ही साथ पर्यावरण को प्रदूषित करने में भी अहम भूमिका निभा रहे हैं। शहरीकरण की रफ्तार तेज होने के कारण आज प्रकृति अपना स्वरूप खोती जा रही है पहले जहाँ हर स्थान पर हरियाली थी, ताजी हवा थी वहाँ पर अब हरियाली की जगह पक्के मकान बन गये हैं और ताजी हवा को तो जैसे कारखानों से निकलने वाली गैसों ने अपने में मिला-मिलाकर धूमिल कर दिया है। इन्हीं गैसों की मात्रा वातावरण में अधिक होने के कारण आज सांस तक लेने में घुटन महसूस होने लगती है और भविष्य में अगर यही हाल रहा तो वह दिन दूर नहीं जब सब लोग मुँह पर आक्सीजन मास्क लगाकर घूमने पर मजबूर होंगे।

यह भी वास्तविकता है कि जब देश तरक्की करता है तो वहाँ शहरीकरण, औद्योगीकरण बढ़ता है, कल-कारखानों में बढ़ोतरी होती है और वास्तव में देश को तरक्की करनी भी चाहिए लेकिन पर्यावरण की कीमत पर नहीं अन्यथा हमारी आने वाली पीढ़ी के लिए हम एक ऐसा पर्यावरण छोड़कर जाएंगे जिसमें उनके लिए जीना दूभर हो जाएगा। हम सभी जानते हैं कि पर्यावरण को बचाने के लिए पेड़ों का लगाना एवं उन्हें बचाए रखना कितना जरूरी है क्योंकि एक पेड़ ही है जो कार्बन डाई ऑक्साइड गैस को ग्रहण कर शुद्ध ऑक्सीजन देते हैं और जो हमारे जीने का आधार है। लेकिन आज के वातावरण को देखते हुए तो लगता है कि धीरे-धीरे वनों की बातें तो किताबों में ही पढ़ने को मिलेगी। वन क्या होते हैं यह आने वाली पीढ़ी शायद नहीं समझ पायेगी। अतः हम सबको समझना होगा कि पेड़ों का काटना प्राकृतिक संतुलन को बिगाड़ रहा है और वायु प्रदूषण को बढ़ावा दे रहा है। अतः हम अगर औद्योगीकरण को बढ़ावा भी दें तो हमें ध्यान रखना होगा कि उनसे निकलने वाली गैसें हमारे पर्यावरण को प्रदूषित न करें। अतः हमें उनका उपचार करके एसी अवस्था में छोडना होगा जिससे पर्यावरण प्रदूषित न हो। जल ही जीवन है लेकिन आज हाल यह है कि जल में सबसे अधिक प्रदूषण है। अतः

आज जीवन ही खतरे में है। जल मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है जिसके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। लेकिन आज के दौर में जल प्रदूषण अपनी चरम सीमा पर है। प्रत्येक राज्य में वहाँ के वातावरण के कारण, शहरीकरण एवं औद्योगीकरण के कारण जल प्रदूषण की अलग-अलग समस्याएं हैं और यही प्रदूषण राज्यों में विभिन्न बीमारियों का कारण बन रहा है। भारत का कोई भी राज्य आज जल प्रदूषण से अछूता नहीं है।

जलवायु के नाम से पर्यावरण को जाना जाता है परन्तु आज न तो जल शुद्ध है और न ही वायु। अतः पर्यावरण को हम शुद्ध कैसे कह सकते हैं। आज हमारी पवित्र नदियाँ गंगा, यमुना, गंगोत्री, यमनोत्री, ब्रहमपुत्र आदि प्रदूषित हो चुकी हैं। आज बढ़ते आधुनिकीकरण ने इन नदियों को भी इतना प्रदूषित कर दिया है कि जो हमारे धर्म संस्कार इन नदियों से जुड़े थे आज उन्हें भी पूरा करते आम इन्सान डर जाता है। भारत देश हमेशा से ही धर्म और आस्था का देश माना जाता रहा है। पुराणों में यहाँ की नदियों का विशेष महत्व दर्शाया गया है धर्म ग्रन्थों के अनुसार राजा भागीरथ ने गंगा को स्वर्गलोक से मृत्युलोक (पृथ्वी) पर लाने के लिए घोर तपस्या की थी। तपस्या से खुश होकर गंगा पृथ्वी पर अवतरित हुई जिसने भागीरथ के बताए रास्ते पर चलकर सभी पूर्वजों का उद्धार किया। तभी से लोगों का मानना है कि गंगा में स्नान कर लोगों को उनके पापों से मुक्ति मिल जाती है। लेकिन वही गंगा आज इतनी प्रदूषित हो गयी है कि उसे आज अपने उद्धार के लिए किसी भागीरथ का इंतजार है।

स्टार न्यूज एवं श्रीराम रिसर्च इंस्टीट्यूट ने गंगा के पानी पर शोध कर बताया है कि गंगा का पानी न पीने के योग्य है और न डुबकी लगाने लायक। भारी मात्रा में कचरे और मल के गंगा नदी में बहाये जाने के कारण पानी अपनी शुद्धता खो चुका है। 2525 कि.मी. का सफर तय करने वाली गंगा नदी में पिछले साल की रिपोर्ट के अनुसार सबसे ज्यादा प्रदूषण उत्तर प्रदेश की उद्योग नगरी कानुपर में पाया गया था। जांच में एम पी एन कॉलीफार्म की मात्रा का पता लगाया गया, जिससे पानी में मौजूद बैक्टीरिया का अनुमान लगाया गया।

आई एस 10500-1991 के पैमाने के मुताबिक प्रति 100 मिली. में एम.पी.एन. कॉलीफार्म की अधिकतम सीमा सिर्फ 10 होनी चाहिए जबकि जांच किये गये रिजल्ट के अनुसार गंगोत्री में 26, देवप्रयाग में 22000, ऋषिकेश में 7000, हरिद्वार में 14000, कानपुर में 3500000, इलाहाबाद में 70000, वाराणसी में 35000 एवं पटना में 46000 पाया गया है। उत्तराखंड सरकार के प्रदूषण बोर्ड के अनुसार नहाने के लिए एम पी एन कॉलीफार्म की अधिकतम सीमा 500 और खेती के लिए 5500 होनी चाहिए।

अतः अगर हमें अपने देश को बीमारियों से बचाना है और स्वस्थ रखना है तो पर्यावरण को बचाना होगा और पर्यावरण को बचाने के लिये प्रदूषण को रोकना होगा। अतः जल प्रदूषण को रोकने के लिए पानी में कूड़ा करकट, सीवेज लाइन एवं कल कारखानों के अम्लीय जल को शुद्ध जल में मिलने से रोकना होगा। यही आज का कर्तव्य होगा तो कल का भविष्य सुरक्षित होगा।

******